बचपन

पाठ का सार / प्रतिपाद्य -

प्रस्तुत पाठ 'बचपन' की लेखिका 'कृष्णा सोबती' हैं। यह पाठ उनके बचपन की घटनाओं पर आधारित है। पाठ में बचपन की घटनाओं को बताया गया है। समय के साथ-साथ लेखिका स्वयं को बड़ा और उम्रदराज़ मानने लगती हैं। इसका कारण यह है कि परिवार में वो सबसे बड़ी हैं और लोग उन्हें जीजी कह कर बुलाते हैं। उम्र के साथ- साथ लेखिका में तरह-तरह के बदलाव भी आते हैं। उनकी पसंद में भी बहुत बदलाव आते हैं। पहले उन्हें रंग-बिरंगे कपड़ें अच्छे लगते थे और अब उन्हें सादे हल्के रंग के कपड़े अच्छे लगते हैं। वो अपने बचपन के समय तथा वर्तमान समय की तूलना करती हैं।

बचपन में लेखिका को रंग-बिरंगे फ्राक पहनना बहुत अच्छा लगता था। सप्ताह में एक दिन छुट्टी वाले दिन अपने कुछ कार्य उन्हें स्वयं ही करने होते थे; जैसे - अपने मोज़े खुद धोना तथा जूतों को पालिस करना आदि। खाने-पीने के सामान में भी काफी अंतर आ गया था। पहले बच्चे आइस्क्रीम के बदले कुल्फी से खुश हो जाते थे, पैटीज के बदले समोसे और कचौड़ी से खुश हो जाते थे। पहले कोल्ड ड्रिंक का काम कोक नहीं बल्कि लेमनेड किया करती थी। चाकलेट पाने के लिए भी बच्चों को काफी दूर का सफर करना पड़ता था। आज हर जगह आसानी से ये सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। परंतु पहले ऐसा नहीं था। उस समय चेस्टनट, काफल, भुने हुए चने काफी पसंद किए जाते थे। परंतु आज समय के साथ-साथ इनकी लोकप्रियता कम होती जा रही है। पहले बच्चों का पसंदीदा खेल घुड़सवारी और इसी प्रकार के अन्य खेल हुआ करते थे। लेकिन आज के बच्चें घर बैठे-बैठे ही अपना खेल खेलना ज्यादा पसंद किया करते हैं। पहले हवाई जहाज पर सवारी करना या उसे देखना भी बहुत सुखद हुआ करता था, जबकि आज यह लगभग सभी लोगों के लिए बहुत साधारण है।

पहले जब लेखिका को चश्मा लगा तो उन्हें अजीब लगता था। लोग उन्हें चिढ़ाते भी थे। परंतु समय के साथ-साथ उन्हें इसकी आदत सी पड़ गई और ऐसी आदत कि चश्में के बिना अधूरा सा लगता है।

लेखिका की चारात्रिक विशेषताएँ -

(1) परिवर्तनशील – लेखिका परिवर्तनशील हैं। उन्होंने समय के साथ खुद को बदला है। पहले के उनके पसंद और अभी के पसंद में काफी परिवर्तन आया है।

(2) **शौकीन** - लेखिका को कपड़े तथा खाने पीने का शौक था। तभी तो चाकलेट और पेस्ट्री के लिए घर से दूर माल तक का सफर तय करती। और घर आकर आराम से उसके स्वाद का आनंद उठाती।

(3) **संवेदनशील** - किसी की भी संवेदनाओं को महसूस कर उसे अत्यंत खूबसुरती के साथ प्रस्तुत करना लेखिका के चरित्र की विशेषता है; फिर चाहे वो संवेदना मनुष्य की हो, जानवरों की या प्रकृति की। प्रस्तुत पाठ में बहुत सुन्दर ठंग से इन सबका चित्रण किया गया है।

पाठ का उद्देश्य -

(1) समय की परिवर्तनशीलता को प्रस्तुत किया गया है। जैसे-जैसे समय बीतता रहता है मनुष्य में, वातावरण में और समाज में बदलाव आते रहते हैं। हम सब को इसका अनुकरण करना पड़ता है।

(2) बचपन की सुनहरी यादों को प्रस्तुत किया गया है। बचपन की यादें हमेंशा ख़ास होती हैं।

पाठ का संदेश -

पाठ के माध्यम से लेखिका ने बचपन के अनमोल समय का महत्व बताया है। आज के समय में भले ही पहले की अपेक्षा अधिक सुख-सुविधाएँ न हो परंतु बाल मन के सरल शुलभ भाव और यादें जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।